आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 04 | उदयपुर रविवार 01 मार्च 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

रंग होली के हजार

होली के रंग तो कई हैं। यह सर्वाधिक अंग-रंग, राग-फाग, हास्य-विनोद, ठिठोली-हमझोली का त्यौहार है। पूरा फाल्गुन का महीना ही बड़ा रसीला है। रसियों की टोली चंग के, फागण के मदछके गीत गाती घर-घर पहुंचती है। सब ओर फूट पड़ती है फागुणी बयार। मस्ती सब ओर है। चंग की तरंग में कोई डावड़ी अपने परण्ये को नूत रही है-

फागण म्हीनो आयो म्हारो /
परण्यो क्यूं नी आयो रे
बणठण बैठी डावड़ी /
टाबरियो जायो रे
ढूंढ़ौ होली नै /
हां हां ढूंढ़ौ होली नै
काजल कंकू गुलाल रोली नै /
ढूंढ़ौ होली नै।

अर्थात् फाल्गुन का महीना आ गया है किन्तु मेरा पति क्यों नहीं आया। बनीठनी डावड़ी ने पुत्र रत्न दिया है। होली पर उसकी ढूंढ करवानी है। काजल, कुम्कुम और रोली से होली को पूजना है।

कोई अपने प्रेमी को हेला दे रहा है-

आज तो अधरात नै / तूं वड़ला हेठे आजै रे
नीतर थारी मावड़ी / री कूंख लाजै रे
असली बाप रो।
हां-हां असली बाप रो।
जायो व्है म्हांसूं हेत पाजै रे असली बाप रो।

अर्थात् आज अर्द्धरात्रि को तू वटवृक्ष के नीचे आ जाना नहीं तो तू अपनी मां की कोख का लज्जित करेगा। तू यदि असली पिता का पुत्र होगा तो अवश्य मुझसे आकर प्रेमाचार करेगा।

चंग की धमरोड़ी :

चंग सबको चंगा रंगा कर देता है। उसकी घमरोड़ी में सब अपना-अपना काम भूल उसके पीछे लग पड़ती हैं। कोई पदड़क्ये घूंघट की ओट में पट-पोट खोले कई तरह के नजराणे देती है तब कई तरह की ग्रंथियां, कुंठाएं और वर्जनाएं खुल पड़ती हैं। कैसे-कैसे गीत-बोल फूट पड़ते हैं, कल्पना तक नहीं की जा सकती। व्यंग्य विनोद के कई बांध टूट पड़ते हैं। शील-अश्लील के सारे समन्दर अथाह थाह में डूबे इतराते नहीं थकते हैं। साहित्य की कैसी सर्जना है जब सारा समूह रचनाकार की भूमिका में अल्हड़-तल्हड़ हो उठता है। कितने अर्थ देते हैं ये फड़के! जीवनचक्र की कितनी चकरियां ओरेदोरे अपनी जवान जवानी की हूंस बिखेरते हैं! सीधी-सादी बात में कितना अंटदार कथन है-

धोती मांई लांग है / तो घाघरा में नाड़ो रे
खदबद बोले राबड़ी / गायां में पाड़ो रे
जमानो बोदो रे।
हां-हां जवान बोदे रे
अखन कंवारी ले भागो जवान जोधो रे
जमानो बोदो रे।

अर्थात् धोती में लंगी है और घाघरे में नाड़ा। राबड़ी खदबद हो पक रही है। गायों में बैल की बजाय पाड़ा इतरा रहा है। समय बड़ा खराब है। अखंड कुंवारी को जवान जोधा भगाकर ले गया है।

गैर और लाल केश्यों की बहार :

ऐसे एक नहीं, अनेक लालकेश्ये न जाने कितने पड़ों-प्रतीकों के माध्यम से वातावरण को वत्सल किये रहते हैं। होली तभी आती है। होली से जुड़े कितने ही पौराणिक आख्यान, ऐतिहासिक प्रवाद और लोकजीवन के घटनाचक्र हैं। जलना प्रहलाद को था पर जल गई होली। उसके पूरे शरीर पर फफोले फूट पड़े। उन्हीं फफोलों का प्रतीक होलीवृक्ष, होलिका की याद में जगह-जगह खड़ा किया जाता है और घास-फूस का आवरण दे जलाया जाता है। होलिका हर साल जलती है।

होली पर हाथों में छड़ियां, डंडियां लिए समूह रूप में मंदिर चौराहों पर रात-रात भर गैरें खेली जाती हैं। ढोल के ढमाकों पर न्यारी-न्यारी तालों चालों तथा घेरों की गैरों का रंग ऐसा जमता है कि जमा ही रहता है। गैरें उठती बैठती गम्मत खातीं। विविध स्वांगों की रंगराती गैरें। आदिवासियों की गैरों में आदिम गंध का अनुष्ठान। सब ओर की न्यारी-न्यारी फटाकेदार गैरें। सबके अपने ठाठ-ठसक। गैरों में गीतों के साथ गालियों का आनन्द और मस्ती।

उदयपुर के मेनार गांव में मेनारिया ब्राह्मणों की तलवारों की जंगी गैर इतिहास के ठेठपन को चरितार्थ करता शूरवीरों का अजेय घोष है। कहा जाता है कि मुगलों के अधीन 52 थाने थे जिनसे मुक्ति पाने का जिम्मा चूण्डावत जेतसिंह ने वल्लभनगर (पूर्व नाम ऊंठाला) में सबसे पहले किले में अपना सिर पहुंचाकर लिया। दूसरा थाना मेनार का था जहां मेनारियों ने अपने पराक्रम और बुद्धि कौशल से मुगलों का नाश किया। इसी खुशी में तलवारों की गैर का आयोजन होता आ रहा है। महाराणा अमरसिंह के समय की यह घटना सन् 1599 के आसपास की है।

बारूद-नारों का खेल :

चित्तौड़ वाली बसी का बारूद की भूंगलियों का खेल बांके बिरलों का ही था। आमने सामने दो दल। प्रत्येक खेल्ये का शरीर काली मिट्टी के लेप दिए तप्पड़ से ढका रहता। फिर भूंगलियों से भभका दिया जाता। आग के तीर और गोले निकलते। हजार सावधानी बरतने पर भी शरीर झुलसे बिना नहीं रहता। एक खेल्ये को तो इस खेल में अपने प्राण तक देने पड़े तब से यह खेल केवल याद बना हुआ है। खेल की यह परम्परा 900 वर्ष पुरानी कही जाती है।

उदयपुर के बद्दू भगतण के दरवाजे से सांडी मुसलमानों की ढोला-मारू की सवारी का रंग लोग आज भी भूले नहीं हैं। यहां के तेलियों की डाकी की सवारी भी कभी बड़ा उमड़ाव देती थी। भीलवाड़ा जिले के माण्डल गांव का नारों का स्वांग लगभग पौने चार सौ वर्ष पुराना इतिहास जीवित किये है। नार चार होते हैं जो आदमी बनते हैं। इनके माथे सिंग होते हैं। सन् 1614 की यह घटना चैत्र कृष्णा तेरस को प्रतिवर्ष दुहराई जाती है। प्रसिद्धि है कि जब मुगल बादशाह शाहजहां उदयपुर से दिल्ली लौट रहा था तब एक रात यहां पड़ाव किया था। बादशाह के मनोरंजन के लिए यह अजूबा स्वांग लाया गया था जो आज भी अजूबा बना हुआ है।

वृक्ष-गोटों पर नेजों की पिटाई :

वनवासियों की गैर ही अनोखी नहीं, नेजा भी अनोखा होता है। जितनी औरतें होती हैं उतने वृक्ष पर गोटे बांध दिये जाते हैं। वृक्ष के चारों ओर बेंत लिए घेरेबंद खड़ी हो जाती हैं महिलाएं, फिर पुरूष उनका घेरा तोड़ वृक्ष पर चढ़ने का साहस करते हैं। महिलाएं बेंतों से उनका डील खोल देती हैं पर मरद उनके आगे कैसे हार मानलें! नेजा का एक रूप वाना गांव में चारभुजा मंदिर की गली में मेनारिया महिलाओं द्वारा हाथों में आग की डालियां लिए देखा जाता है। इनके बीच भील युवकों का समूह दौड़ता हुआ आता है तब महिलाएं अपनी डालियों से जोरदार पिटाई करती देखी जाती हैं।

होली पर मेवाड़ के गड़बोर में जो मेला भरता है, उसके लिए प्रसिद्धि है कि कभी यहां पांडवों ने गैर खेली थी। वृत्ताकार नृत्य में हाथों में छड़ियां, लम्बे डंडे, कामड़ियां लेकर जो नृत्य किया जाता है वह गैर कहलाता है। नृत्य में प्रयुक्त डंडे खांडे नाम से जाने जाते हैं। कहीं-कहीं छड़ियां लहरदार होती हैं। नाथद्वारा में शीतला सप्तमी से पूरे माह तक गैर का आयोजन रहता है। पहली गैर श्रीनाथजी को समर्पित होती है जो चौपाटी पर खेली जाती है।

होली के दूसरे दिन ईलोजी के सम्मुख नृत्य किया जाता है। कहीं-कहीं ईला-ईली की स्थापना देखने को मिलती है। कहते हैं ईलोजी हिरण्यकश्यप के बहनोई थे। ये जब उसकी बहिन ईली को ब्याहने आये उससे पूर्व ही ईली अर्थात होलिका प्रहलाद को गोद में ले अग्नि भेंट हो गई। प्रहलाद बच गया किन्तु होलिका के नहीं रहने पर ईलोजी सुधबुधहीन हो गये और सदैव के लिए कुंवारे रहे।

ईलोजी की सवारी :

मेवाड़ के आमेट, वल्लभनगर, सनवाड़, कोशीथल, आदि कई स्थानों पर ईलोजी के चबूतरे, चीरे और स्थानक हैं। देवगढ़ में ईला-ईली की बड़ी मजेदार सवारी निकाली जाती है। निपूती औरतें रात्रि को नग्नावस्था में ईलोजी के धोक लगती हैं और तीन-चार बार घोल घाई लेती हैं। इससे अगले वर्ष तक वे मां बन जाती हैं। होली के प्रमुख वाद्यों में चंग, ढोल, ढोलक, मादल, ढफ, मजीरा आदि हैं।

शुभकामनाएं

होली पर सभी पाठकों, लेखकों, सुधीजनों तथा विज्ञापनदाताओं को हार्दिक शुभकामनाएं।

पोथीखाना

नये विषय और उद्‌भावनाओं की कविताएं

अघोरी आंख्यां रो साच कवि भानसिंह शेखावत 'मरूधर' की 95 राजस्थानी कविताओं का संकलन है। कुछ तो विषय भी नये हैं और पुराने लेकर भी जो कविताएं लिखी गई हैं वे नई उद्‌भावनाएं लेकर आई हैं।

कुछ विषय तो ऐसे हैं जिन पर एक से अधिक कविताएं हैं। इनमें से कवि और कविता पर 9, शब्द पर 6, घर पर 5, सूरज पर 4 तथा नींद, जीवन आदि पर एक से अधिक कविता मिलती है। इसमें कवि की कल्पनाजनित दृष्टि की बहुविज्ञ परिपक्वता, प्रतिपादन क्षमता, ठेठ शब्दावली की विपुलता तथा सूक्ष्म विलोचन लाघवता परिलक्षित होती है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

(1)
कडूम्बै बांटली जमीन / धन दौलत
चल्यां करया स्है देस-दिसवार
झड़ग्या पत्ता सूखगी छोटी डालियां
इण आस नै जड़ां मांय रोप्यां ऊभी है नीमड़ी, कै
कदै तो टाबर आवैला हींडो घलण नै।
(नीमड़ी, पृ. 116)

(2)
बेबसी री थकावट स्यूं टूटती देह
आ पड़ी बिस्तर पर।
घर हाळी बजा रैयी है
आटै रो रीतो पीपो / जगावण खातर
दिखा रैयी है / चाय पत्ती मांय पड़ी ऊंदरा री बीट।
(नींद, पृ. 48)

(3)
आंख्यां री डिबली में
रेत रो काजळ है नींद।
(नींद, पृ. 30)

(4)
कविता / धरती री जबान है
अर घास हथियार
दोन्या रै फैलाव स्यूं
हरी हुज्या सी / बियाबान बावनी उजाड़।
(कविता अर घास, पृ. 18)

(5)
ताड़ी तोड़ बा रै जतन में / टूटगी पांख्यां
पण चांच है साबत मालिक नै काटठौ खातर।
(म्हैं सूवो हूं, 71)

(6)
चिड़िया जळमी है चांदी री चमची मूंडै लियां
कोठी मांय एयरकंडीशन है
सोनै रै हींडे पर हींडै रात दिन
बतावण लागी वा एक दिन
चांच स्यूं गिर पड़ी चांदी री चमची।
(चिड़िया अर चमची, पृ. 70)

राजस्थानी भवन फाउण्डेशन, 3 / 343 मालवीयनगर, जयपुर-302017 से छपी यह पुस्तक अकेली इसलिए है कि इसमें न तो कवि का कोई कथ्य-तथ्य है और न किसी अन्य ने ही अघोरी आंखों का सच उगला है। सौ पृष्ठों की यह पुस्तक अपनी डबली में दो सौ रूपये की कीमत लिये है। – **म. भा.**

कहावतों के कहकहे (13)

(115) कीनै बेंगणवायरा कीनै बेंगण पच
(116) कुमार कुमरीऊं पूछे नीं आवै जदी गधेड़ा रा कान ऐंठै
(117) कुमार फूटी हांडी में ई खावै
(118) कुलकी में गोळ कई गालणो
(119) कुलतां में तो तेल हीज आवै
(120) कूकड़ी वालो हेवो है
(121) आखै कूड़ ई भांग पड़ीगी
(122) वना गांड रो कुलको
(123) चूतिया चैन परा में वसे, चौदू चैन परा में बसे।
(124) छीतरी रो काड़
(125) आंधा चोदै न बेरा पैदा व्है
(126) काको दै भतीजा ने गांड फाटतां गोठ
(127) खांड गले जदी सब आवे, गांड गले जदी कोई नी आवे

नाम तो श्री भगवान को

–डॉ. देव कोठारी–

इस कलयुग की कला अजब-गजब की है। इसमें चाहे मूर्खों को न पहचाना जा सके किन्तु नाम-भेद का चरित्र अनूठा, अनोखा और अलौकिक है। माहात्म्य ऐसा कि नाम कुछ है और काम कुछ। शक्ल के अनुरूप अक्ल नहीं तो अक्ल के अनुसार शक्ल भी नहीं। यह भेद-अभेद का अन्तर, जंतर-मंतर की तरह दार्शनिक स्वरूप लिये हुए है।

देखोन् ! सुखराम बहुत दु:खी है और दु:खीराम अलमस्त। ज्ञानीराम अज्ञानी है तो चतुरसेन निरे बुद्धू। बुद्धदेव निर्बुद्ध है तो विद्याधर के लिये काला अक्षर भैंस बराबर। ठाकुर शेरसिंह के सामने कुत्ते भौंक रहे हैं और दयाराम मच्छर मार रहे हैं। नाम नयनसुख लेकिन आंख से अंधे। नाम गौरेलाल किन्तु रंग से एकदम श्याम घनश्याम।

धनीराम को हमने सदा निर्धन देखा। दूल्हेराम आजीवन कुंवारे रहे। प्रीतमसिंह बिना प्रियतमा के तड़फ रहे हैं। अशर्फीलाल के घर में खाने को दाने नहीं हैं तो छदामीलाल मिलों के मालिक हैं। हवेलीराम किराये के मकान में रह रहे हैं। जुग्गीलाल हवेली में आराम फरमा रहे हैं।

रणधीरसिंह को रण से भागना पड़ रहा है। भागचन्द का तो भाग्य ही सोया पड़ा है। सरकार परिवार नियोजन का ढींढोरा पीटते-पीटते थक गई, लेकिन अकेले बालकराम ब्रह्मचारी के बारह बच्चे हैं।

ऐसे ही शान्तिस्वरूप, ज्वालाप्रसाद, पूंजीलाल, दीनदयाल, लम्बूराम, छोटूमल, भीमसेन, गणेशीलाल, दिगम्बरसिंह, थानसिंह, हीरालाल, अमरचन्द, आशाराम, गंगाराम, तोताराम हैं।

अब जरा दीदियों को भी देख लें। शीला दीदी का शील झगड़ने में ही खर्च हो गया। ऐसा ही कुछ सुमन, कुसुम, निर्मला, सुधा, मृदुला, मृगनयनी, दर्शनाकुमारी, चपलादेवी, राधादेवी, सीतादेवी नामी देवियों-दीदियों को देखा जा रहा है।

नामों के फलादेश में ज्योतिषियों का भी कोई जोर नहीं रहा। राशि के आधार पर नामकरण होगा तो हर नाम की कुण्डली का फलादेश भी ऐसा ही होगा। यह केवल कलयुग की ही बात नहीं है। त्रेतायुग हो या सतयुग, द्वापरयुग तक भी ऐसा ही हाल नामों का रहा है।

इसीलिए समझेबुझों ने ठीक ही कहा कि नाम में क्या रखा है। नाम ठाम कोई भी हो सच अधिक यह है जो मृत्युलोक में विचरण कर रही एक दिव्य आत्मा ने मुझे कहा, नाम तो श्री भगवान को।

रामी रॉयल और उनके प्रसिद्ध सिग्नेचर आउटलेट्स 'टनाटन किचन एंड बार एंड आर अड्डा का उद्‌घाटन

उदयपुर। प्रख्यात इंटरनेशनल रामी ग्रुप ऑफ़ होटल्स और अमानगिरि होटल्स एंड रिज़ॉर्ट्स की साझेदारी में उदयपुर में शनिवार को 'होटल रामी रॉयल' का भव्य शुभारंभ बलीचा में आईआईएम के पास हुआ। इसके साथ ही उनके प्रसिद्ध सिग्नेचर आउटलेट्स 'टनाटन किचन एंड बार' और 'आर अड्डा' का भी उद्‌घाटन किया गया। झीलों की नगरी उदयपुर के नए वेडिंग डेस्टिनेशन रामी रॉयल में दुनिया भर के स्वाद का अनुभव भारतीय व्यंजनों के जायकों में मिलेगा। यह जानकारी प्रेसवार्ता में अमानगिरि होटल्स एंड रिज़ॉर्ट्स के मालिक गौरव जैन, रामी ग्रुप इंडिया के सीईओ निहित श्रीवास्तव, अशोक जैन तथा अर्जुन जैन ने दी।

गौरव जैन ने बताया कि उदयपुर से बेहतर जगह क्या हो सकती है! टनाटन और उदयपुर के बीच एक बात आम है उनका 'देसीपन'। टनाटन और उदयपुर दोनों ही रॉयल्टी के लिए जाने जाते हैं। टनाटन में भारतीय भोजन की आधुनिकीकरण सामग्री और खाना पकाने की तकनीक का उपयोग अन्य व्यंजनों से मिलता है लेकिन उसमें भारतीय जायके का एक स्पर्श बनाए रखना जरुरी है।

निहित श्रीवास्तव ने बताया कि यह हमारे लिए एक दोहरे उत्सव का अवसर है। बहुत ही खुशी की बात है कि हम उदयपुर में नया और बेहद शानदार वेडिंग डेस्टिनेशन लेकर आये हैं। हम भारतीय प्रभाव, समकालीन प्रस्तुतियों, पाक शैलियों और माहौल के साथ पारंपरिक वैश्विक और भारतीय परंपरा को समेटते हैं। यह हमारा वादा है की हम हर चीज को शाही अंदाज में प्रस्तुत करेंगे। हम हर तरीके से टनाटन, उदयपुर को अद्‌भुत और हर तरह से सबसे बेहतरीन बनाने का वादा करते हैं।

उन्होंने बताया कि झीलों के अद्‌भुत शहर में रामी रॉयल शाही शादी का नया अद्‌भुत और अद्वितीय डेस्टिनेशन बनेगा। शानदार 5 स्टार होटल, जहां पर हर मनचाही कंफर्ट के बीच आश्चर्यजनक सनसेट प्वाइंट्स के साथ, झील के बीच में शादी करना किसी ख्वाब के सच होने जैसा होगा। मुंबई, दुबई/ बहरीन और कोल्हापुर में धमाकेदार और अद्‌भुत लांचिंग के बाद टनाटन की उदयपुर में मौजूदगी स्वाद के कद्रदानों को वैश्विक अनुभवों से सराबोर कर देगी। यहां खाने की सेवाएं न सिर्फ अपने ग्राहकों को स्वाद का भरोसा देती है बल्कि वह उन्हें रॉयल तरीके से पेश करके उन्हें शाही समय में वापस ले जाती है।

उन्होंने बताया कि भारतीय व्यंजनों में समकालीन और उत्तम विविधताओं के साथ 'टनाटन, उदयपुर' में प्रीमियम भोजन का वास्तविक स्वाद प्राप्त होगा। भारत के कुछ आश्चर्यजनक मसाले जो खाने को अविश्वसनीय रूप से स्वादिष्ट बनाते हैं, का कुछ रेसिपी में उपयोग कर टनाटन खाने को स्वादिष्ट बनाने के लिए करता और शाही अंदाज में पेश करता है।

शानदार शाही भारतीय सजावट और अंदरूनी खूबसूरती की परिभाषा और शोधन सूक्ष्म विवरण के साथ युग्मित, 'टनाटन किचन एंड बार, उदयपुर' में न केवल आपको शाही महसूस कराता है बल्कि राजाओं, प्राचीन और दुर्लभ साधन को दर्शाता है। टनाटन उदयपुर में न केवल बेहतरीन खाना और बेहतरीन सत्कार मिलता है बल्कि एक खूबसूरत और बेहद शानदार इंटीरियर्स भी मिलते है जो एक व्यक्ति को हकीकत में रॉयल महसूस करा सकता है।

'टनाटन- किचन एंड बार, उदयपुर' के कर्मचारियों द्वारा इंडि-वेस्टर्न सार्टोरियल स्टाइल में स्वागत करने के लिए तैयार किया गया है। विशेष सत्कार के लिए मशहूर रामी रॉयल के नए आउटलेट 'टनाटन किचन एंड बार' में खास तरह का सत्कार मन को लुभा देगा। यह प्रामाणिक क्लासिक भारतीय व्यंजनों की पेशकश करने में माहिर हैं।

वाधवानी को 'अहिल्या शक्ति सम्मान'

वामा साहित्य मंच तथा घमासान डॉट कॉम न्यूज पोर्टल द्वारा इंदौर में वरिष्ठ साहित्यकार कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' को 11000/-की मानदेय राशि से 'अहिल्या शक्ति सम्मान' वरिष्ठ उपन्यासकार नासिरा शर्मा, उपन्यासकार जयंती रंगनाथन तथा कुलपति रेणु जैन ने प्रदान किया। समारोह में भारतभर की दो सौ वरिष्ठ साहित्यकार उपस्थित थीं।

स्मृतियों के शिखर (94) : डॉ. महेन्द्र भानावत

सुरमय लेखन के सुरम्यधर्मा विजय वर्मा

श्री विजय वर्मा सुरमय लेखन के ऐसे सुरम्य व्यक्तित्व हैं जो हर समय हृदय की धड़कन के समान गुनगुनाते हुए सौम्य बने रहते हैं। वे उत्कृष्ट गीत लिखते हैं। उन्हें धुन धनी बनाते हैं और मधुरे-मधुरे गुनगुनाते हैं। उनके साथ कभी किसी आदिवासी मेले में, कभी किसी समारोह में तो कभी किसी कलाकार से भेंट करने, मिलने, बतियाने में तो कभी किसी विशेष लोकानुरंजन से जुड़ी प्रदर्शनधर्मी कला प्रस्तुति में मेरा कई बार का साथ रहा। वे सभी चीजों को बहुत बारीकी से देखते हैं। समझने के लिए प्रश्नातुर रहते हैं और अपने मंतव्य को भी रखते हैं।

छोटे से छोटे कलाकार से मिलने, उसकी कुशलक्षेम पूछने और उसके साथ स्नेहशील बने रहने का गुण भी उनमें है जो अन्य ***बड़ों में बहुत कम दिखाई देता है। बड़े लोगों में, हर समय उनकी ऐंठ और अफसराना ओज उन्हें स्वयं के लिए स्वयंभू भले ही बनाता हो किंतु अन्यों के लिए तो वे मजबूरन छविदार ही बने रहते हैं। विजय वर्मा को मैंने इस बेगाना बड़प्पन से भी दूर देखा इसीलिए मेरी उनसे निकटता भी बनी रही जो अब भी अभिराम बनी हुई है।***

वे समयबद्ध कार्यसिद्धि लिये रहते हैं। उनकी दृष्टि में जो भी पुस्तक, पत्र-पत्रिका नई और उपयोगी लगती है, उसे वे अपने लिए अवश्य प्राप्त करते हैं। इसके लिए वे निशुल्क भेंट की प्रतीक्षा नहीं करते हैं। अपनी अंटी ढीली करने में सदैव आगे बल्कि एडवांस रहते हैं।

अपने मित्रों की रुचियों का स्मरण उन्हें सदैव रहता है इसीलिए वे उनके उपयोग में आने के लिए कभी उन्हें किसी पुस्तक के आलेख की फोटोप्रति भेजते हैं तो कभी किसी पुस्तक के प्रकाशन और उसके मूल्य तक की खबर सुलभ कराते हैं। ऐसा भी होता है कि कभी वह पुस्तक ही उसे अपनी ओर से सुलभ करा देते हैं। ऐसे ही वे विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। अपने द्वारा लिखे जा रहे निबंध या कि ग्रंथ की सूचना देकर उसके लिए वांछित सामग्री की तलाश की सूचना के साथ उस संबंधी सामग्री की आधारभूत सूचना और उसकी प्राप्ति के लिए भी तड़फ बनाये रखते हैं। इस संबंधी व्यय वे स्वयं वहन करते हैं और विनम्र आभार मानते हैं।

वर्माजी का परिचय क्षेत्र बड़ा विशाल है। इसलिए उसी तरह की जानकारी का भी उनके पास खजाना है। यह खजाना उनके पुस्तकालय का और विभिन्न प्रकार की अलभ्य दुर्लभ सामग्री का भी होना चाहिये जिसका उपयोग वे अपने लेखन में तो करते ही हैं। यद्यिप मैंने उनके इस खजाने को न तो कभी निहारा है और न कभी उनसे जानने की चेष्टा ही की है किंतु समय-समय पर उनके पत्रों से, और फोन आदि से मेरा यह विश्वास सुदृढ़तर बना हुआ है और जो भी अध्येता मेरे पास आते हैं, उन्हें उनसे मिलने, विचार विमर्श करने और सामग्री उपलब्ध कराने तक का भरोसेबंद आश्वासन देने में कतई संकोच नहीं करता हूं और उसकी खबर उन्हें भी दिये रहता हूं।

वर्माजी का लेखन क्षेत्र भी बड़ा व्यापक है। मेरी तरह सीमित नहीं है। ***मित्रों से मिलने की याद*** भी ***उन्हें कईबार आतुर किये रहती है।*** मेरा जब-जब भी जयपुर जाना हुआ, उनसे चाहकर भी समयाभाव के कारण भेंट नहीं कर सका। इसका मुझे खेद ही रहा और जब मैंने उसकी सूचना उन्हें दी तो उन्होंने यह सारा जिम्मा अपने पर लेते हुए मुझे कहा- 'केवल आने की सूचना भर करदें। मेरे यहां लाने और पुन: यथास्थान पहुंचाने का जिम्मा मेरा रहेगा, कतई संकोच न करें।'

ऐसे हेतालु यद्यिप ***अब अंगुलियों पर गिनने जितने भी नहीं रहे किंतु आपसी सरोकारों का निर्वाह हम किस तरह से बेहतरीन ढंग से एक-दूसरे के साथ कर सकें, करना चाहिये यह बखूबी उनसे सीख सकते हैं।***

वर्माजी से पहलीबार ठीक ढंग से 8 अक्टूबर 1980 का मिलन मेरी स्मृति में है। तब उदयपुर के सूचना केंद्र के एक साहित्यिक समारोह में बड़ी अच्छी उपस्थिति में मिलना हुआ। मिलना क्या, उनसे अति स्नेहिल आत्मीयतापरक सम्मान ग्रहण करने का सुखद उजास पा सका। वह समारोह बड़ी गांव के बंशी साकेत की सृजन मंच संस्था द्वारा किया गया जिसमें मुझे अपनी लेखकीय उपलब्धियों के लिए स्वर्ण पदक दिया गया था। मेरे जीवनकाल का वह पहला एक ऐसा स्वर्णिम समारोह था जो मुझे ही नहीं, कइयों को अब भी याद है।

इस समारोह में देवीलाल सामर, नंद चतुर्वेदी और विजय वर्मा मुख्य-प्रमुख मंचासीन मेहमान थे। समारोह के मुख्य आकर्षण तो ये ही महानुभाव थे किंतु मेरे द्वारा लिखित साहित्य की प्रदर्शनी ने भी सबका ध्यान आकृष्ट किये रखा। इस समारोह की एक बड़ी उपलब्धि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित खबर भी कई दिनों तक चर्चा में रही लेकिन खासतौर से धर्मयुग में प्रकाशित खबर ने पूरे देश में हमें चर्चित कर दिया।

15 फरवरी 1980 को उदयपुर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित खाखड़ गांव में गरासियों का मेला देखा। शिवरात्रि को भरने वाले इस मेले में आसपास तथा दूरदराज के आदिवासी महिला-पुरुष विशेष उल्लास तथा उत्साह से उमंगपूर्वक नाचते-गाते फूले नहीं समाते हैं। सर्वाधिक रूप में गरासिया स्त्री-पुरुष रात-रात भर अपनी रंगीनियों में डूबे रहते हैं। यों भी गरासिया लोग बड़े रंगीन मिजाज के होते हैं। महिलाएं अजीब ढंग से बनीठनी रहती हैं।

चित्तौड़गढ़ में 26 मई 1990 को हमने नानालाल से भेंटकर बहुत सारी जानकारी प्राप्त की जो उन्हीं से मिल सकती थी। नानालाल तुर्रा ख्यालों के शीर्षस्थ उस्ताद चैनराम की मंडली के मुख्य कलाकार थे। उनके द्वारा जहां-जहां भी तुर्रा ख्याल प्रदर्शित किये जाते, उनकी रंगत ही कुछ और होती। वे पूरी रात अपने प्रदर्शनों से ख्याल प्रस्तुति में जान डालने वाले होनहार तथा आशु अभिनेता थे।

बात करने पर नानजी ने उल्लसित मन से अपना अतीत ही खोल दिया। हमें इस बात का संतोष रहा कि जो बातें प्राय: सुनने को नहीं मिलतीं वे सब उन्होंने अपने मुक्त मन से हमें सुना दी। यह भी बताया कि अब वह रंगत और राग-रंग नहीं रहा पर ख्यालों के प्रति रुझान अब भी कायम है। वही उत्साह, उल्लास और उमावा लोगों में है इसीलिए जहां-जहां भी ख्याल मंडता है, गांव के गांव देखने उलट पड़ते हैं और जो स्नेह, प्रेम तथा भाईचारा उनमें देखा जाता है वह पहले जैसा ही है।

उन्होंने बताया कि पहले तो सिनेमा समझो तो भी ख्याल-तमाशे ही थे और टीवी जैसा हमारा काम रात-रात भर चलता रहता पर इन दोनों ने हमारे काम पर असर तो पैदा किया ही है। अब सबकी टकटकी टके यानी पैसे पर है। चैनरामजी का मुकाबला तो उन्हीं के साथ चला गया किंतु उनकी जोत को हम जलाये रख रहे हैं। कलंगी उस्ताद खाजूखां भी नहीं रहे। तुर्रा कलंगी ख्यालों का तब स्वर्णयुग था। उनके पीछे लोग सबकुछ न्यौछावर कर देते। रानी बनने पर सौ-सौ तोले के जेवर और उनके खुद के पहनने के कीमती कपड़े हमें देकर खेल को अव्वल बनाकर वाहवाही ली जाती थी। गांव के सेठ, ठाकुर, साहूकार, सामंत हमें हथेली पर रखते थे।

नानजी अपने साथ के लोगों को खोकर गमगीन हो गये। आंसू पौंछते, सिसकियां भरते हम उन्हें धैर्य बंधाते रहे। बोले- 'किस-किस को याद करूं, ***अठाणे के शहनाई वादक घासीबा भी जाते रहे। उनकी शहनाई सूर छोड़ती तो लोगों को पता लग जाता कि ख्याल की रंगत बिछनेवाली है। रात को आठ बजे से लेकर सुबै सूरज भगवान की किरण आये तक उनकी शहनाई चलती रहती।*** वे हिलते तक नहीं। ***ख्याल का सारा दारोमदार शहनाई के सुर पर फिरकनी सा नाचता। घासीबा के बाद*** धनेर गांव के ***हरिरामजी ने उनका पाट पकड़ा तो लगा कि वही रंगत जिंदा है*** परन्तु उनके बाद कुछ लगता नहीं कि क्या होगा।'

नानजी की ये सब बातें सुन वर्माजी रंगत में आ गये। उन्होंने अपना सुर-स्वर खोलते तुर्रा की, कलंगी की, फड़काबाजी की, लावणी की कई रंगतें हारमोनियम की पेटी की तरह पेश की तो नानजी को रंग चढ़ा।

उन्होंने अपना साठ वर्षीय पिछला सफरनामा खोला और गायकी की, रंगत की, देशी राग-रागनियों की अपनी अनुभव-पकाई का पूरा रस ही उड़ेल दिया। अपनी जीवनगाथा के असल को खोलते उन्होंने हमें कई तरह की आपबीती जानकारी से भी समृद्ध किया।

एक किस्सा सुनाते बोले, चित्तौड़ के पास के गांव कनोज की एक बरात सावा गई। सावा गांव में तुर्रा खेल हो रहा था। वर के रूप में जो शादी करने आया, वह अच्छा खिलाड़ी था। चंवरी में, आधी रात में उसे उस खेल में ढोलक की आवाज बेताला सुनाई दे रही थी।

इसे वह बर्दाश्त नहीं कर पाया। दूल्हे वेश में ही वह चंवरी छोड़ वहां पहुंचा और मंच पर एक लावणी के सहारे उसने ढोलक बजाने वाले को उसकी गलती का एहसास करा, पुन: चंवरी में लौट पड़ा। लावणी थी-

ढोलक जरा आछी बजा रे म्हारा ताऊ ।
मंच माथै आयो दूल्हो दाऊ ।।

शेष पृष्ठ सात पर

होली के विरह में इलोजी

कई गाँवों, कस्बों, शहरों में इलोजी की ईंट-पत्थर से बनी प्लस्तर की हुई विशाल प्रतिमा देखने को मिल जायगी। राजसी वेश में व्यक्तित्व के धनी ये अद्‌भुत देवता अपने विशाल एवं भव्य शाही ठाठ में ऊँचे आसन पर बैठे हुए मिलेंगे। इलोजी का भरा हुआ चेहरा, हष्टपुष्ट शरीर, बाँकी तनी मूंछें, कानों में कुण्डल, गले में हार, भुजाओं पर बाजूबंद, कलाइयों में कंगन तथा भाँति- भाँति के रंगों की विविध कोराई में वैशिष्ट्य और शाही रूप परिलक्षित होता है।

होली का यह देवता कहीं-कहीं सचमुच के वस्त्राभूषणों से सजाया जाता है। अच्छे वेश कीमती वस्त्र पहनाये जाते हैं। पाग में तुर्रे कलंगी मोड़ लगाये जाते हैं। सोने के कीमती आभूषण तथा असली मोतियों के हार तक पहनाये जाते हैं। हाथ में नारियल रख दिया जाता है।

पुराणों में इलोजी के एक आख्यान के अनुसार सम्राट हिरण्यकश्यप बड़े प्रतापी और प्रभावी सम्राट थे। इनके होली नाम की इकलौती बहिन थी। हिरण्यकश्यप का प्रहलाद नामक पुत्र था जो बचपन से ही बड़ा धार्मिक और भक्तिवान था। हिरण्यकश्यप को यह अच्छा नहीं लगा अत: उसने होली को कहा कि वह किसी तरह प्रहलाद का खात्मा कर दे। होली के पास एक दिव्य चीर था। कहते हैं कि उस पर अग्नि का कोई प्रभाव नहीं पड़ पाता था। होली उसे ओढ़ प्रहलाद को अपनी गोद में लिये अग्नि में जा बैठी। इससे होली तो जल मरी और प्रहलाद बच गया।

इधर इसी होली से शादी करने इलोजी की धूमधाम से बरात आ पहुँची। जैसे ही इलोजी को होली की इस घटना का पता लगा वे अपनी सुधबुध ही खो बैठे और होली के विरह में आजीवन कुंवारे रहे। उदयपुर के जावर के पास अत्यंत प्राचीन खंडहरों में हिरणाकुश का महल आज भी चर्चित है।

शब्द रंजन

उदयपुर, रविवार 01 मार्च 2020

सम्पादकीय

होलिया री उड़े रे गुलाल

भारत देश की ही यह खासियत है कि यहां त्यौहार-उत्सवों का मेला ही मेला है इसलिए जनजीवन में भी हर समय रेलमपेला है। जीवन का रस देखना हो तो यहां। राग-रंग की जगह राग-रंग की गंगा बहती है तो गम के अवसर पर रोना-धोना भी यहीं मिलेगा। गांवों को निहारें तो चौपाल-चबूतरों पर गपशप की बहारें मिलेंगी तो पनघट पर पणिहारिणों की चहलकदमी का उत्साह। श्रमशील किसान खेतों में पसीना बहाते देखे जायेंगे तो नखराली नारियों की गृहस्थी का नजारा देखते ही रह जायेंगे।

प्रकृति भी यहीं टूटमान हुई है। ऋतुओं का रचाव यहीं इन्द्रधनुषी रंग बिखेरता है। हमारे बड़ेरों ने कैसे सब रंग-ढंग बनाकर जीवन को खुशहाल बनाने की उम्मीदें बांधी हैं। जीवन को जंजाल मुक्त करने के लिए चार आश्रम बनाये। चौरासी लाख जीवों की गति में आदमी एक ऐसा जीव है जो सबका शीर्षस्थ है। उसे ही वे सारी शक्तियां प्रदान की हैं जिनसे वह पूरी सृष्टि के कल्पनाजनित यथार्थ को पा सके।

यही कारण है कि उसे जहां सर्व शक्तिमान बनाया वहां मर्यादाएं भी बांधी और पतंग बनाकर उन्मुक्त छोड़ा पर उसकी डोर उस परम शक्ति के हाथों रखी जो अदृश्य, रहस्यमय और अलौकिक बनी हुई है जिससे आदमी डरता रहे और यदि उच्छृंखलता पर उतर आए तो उसे परेशानियों, विपत्तियों, विडम्बनाओं तथा निराशाओं के भंवरजाल दिये जिनसे आवृत्त हो वह दु:खों के आल व्याल जंजाल में ही विचरण करता रहे।

हमारे यहां उत्सव-त्यौहार तो कई हैं। सब धर्मों के जुदा-जुदा हैं। जैसा मन करे मनाओ पर मुख्यत: दो ही हैं। एक दीवाली और दूसरा होली। दोनों की ऋतुएं अलग। वातावरण अलग। रूप-रंग अलग। मनाने के तौरतरीके अलग।

दीवाली रोशनी का त्यौहार है। इस मौके पर घर की लिंपाई-पुताई, साफ-सफाई और सज्जा-धज्जा होकर दीपक ही दीपक प्रकाशमान होते हैं। अन्तरमन में ज्योति भरने का यह आध्यात्मिक अवसर भी देता है। अन्धेरे में प्रकाश देता है। मृत्यु को अमरत्व प्रदान करता है। पूर्वज धरती पर आते हैं। दिव्य आत्माएं यहीं मेलेठेले कर फिर अपने-अपने लोक में जाती हैं। अनेक तरह की साधनाएं कर साधक धन्य होते हैं।

दूसरा होली है। यह उत्साह, उमंग, आनन्द, हंसी, मसखरी तथा छेड़छाड़ का त्यौहार है। प्रेम की कई कोंपलें खिलती हैं। अंग-अंग अंगड़ाई लेने लगता है। पूरी प्रकृति में अजीब रोमांस का रोमांच व्याप्त हुआ दिखाई देता है। तरह-तरह के फूल खिलते हैं। उनसे तरह-तरह के रंग, सुगंध फूटते हैं। प्रेम के जितने रंग और रस इस ऋतु में बहारें लेते हैं, अन्य किसी ऋतु में देखने को नहीं मिलेंगे।

अनेक तरह की गेरें, फागें खेलते हर गांव गली में थिरकते मिलेंगे। रसियों के टोले के टोले चंग ढप पर थाप देते रंगेचंगे नजारे देते, देवर-भौजाई के, ब्याई-ब्याण के प्रहसन इसी ऋतु में पलित-फलित होते हैं। मनचले, मदछकों में केसरिया बालम और लालकेश्यों के लांगुरिये इलोजी बन जो नजारा नजराणा परोसते हैं उससे हर कोई हर-हर गंगे होता नजर आता है। ब्रजमंडल तो पूरा ही रासमंडल में रमत्या भरता लगता है।

आप जिस रंग में बहना चाहें, बहें। होली पर शब्दों का रंजन सबको लगे।

पग-पग पर परचम पलाश के

-डॉ. कहानी भानावत-

हमारे यहां प्रकृति भी नित नूतन सिणगार करती हर मौसम को अधिक रंगीन, खुशनुमा बनाकर अपनी रूपश्री को बड़े अनूठे रस में छविमान करती है। यह परिवेश दिन को ही नहीं, रात्रि को भी अपने कार्यकलाप जारी रखता है।

यही प्रकृति षट ऋतु प्रदान करती है। दो-दो माह की ऋतुएं पूरा वर्ष नयापन देती हैं। चार ऋतुओं का सौंदर्य तो हम प्रत्यक्ष: महसूस करते ही हैं। बसंत का मौसम सर्वाधिक सुहाना लगता है। ग्रीष्म में गर्मी के मारे ताप असह्य हो जाता है। शरद में वर्षा की जोरदार जड़ी और शीत में कंपकंपी देता मौसम सूर्य को भी ठिठुराता लगता है।

बसंत सबमें श्रेष्ठ ऋतु होने के कारण इसे ऋतुराज कहा गया है। इसके स्वागत में प्रत्येक वृक्ष झड़कर अपने पत्तों से धरती पर बिछात करता पाया जाता है। फिर सारे वृक्ष नव्य एवं भव्य रूप में फलते-फूलते हैं। पतझड़ी हवाओं की सरसराहट वृक्षों, झाड़ियों और लताओं को निर्वस्त्र किये चीरहरण-सा दृश्य खड़ा कर देती हैं। चहुंओर वन-उपवनों, मैदानों-घाटियों तथा खेत-खलिहानों में खड़ी वृक्षावलियां गोपियों की तरह नटखट कन्हैया के करामाती

कौशल के आगे बेबश लगती हैं। धीरे-धीरे कचनार के बैंगनी, नीले, सेमल के गहरे लाल और अमल तास के पीतवर्णी चटकीले रंग बसंत के आगमन की अनुभूति लिए अनोखे तेवर लिए लगते हैं।

पलाश के फूलों की यह खासियत है कि वे ऊपर से पूरे केसरिया परिधान लिए लगते हैं और नीचे का कालापन जैसे केसरिया वीर के पास सुरक्षा के लिए ढाल है। लगता है जैसे अधजले अंगारों की तरह पूरी वनराई शोभित हो रही है।

पलाश को ढाक अथवा खांकरा भी कहते हैं। इसके पत्तों से बाज यानी पत्तल-दोने बनते हैं जिनमें भोजन किया जाता है। ब्याह शादी के अवसरों पर इन्हीं पर प्रीतिभोज परोसा जाता है। घास की छोटी-छोटी तिलियों से पत्ते जोड़कर बाज-दोने तैयार किये जाते हैं। यह काम बावरी और नाई जाति के जिम्मे रहा है।

युद्ध के समय विकट परिस्थितियों में सैनिक पलाश के फूलों से निर्मित केसरिया रंग के कपड़ों में जय-पराजय का भाव लिए रणांगण में कूद पड़ते थे। इसी रंग से रंगरेज केशरिया रंग के कपड़े रंगते। गोंद भी इसी वृक्ष से मिलता। इसी के फूलों को उबालकर नारंगी रंग बनाया जाता। होली पर यही रंग भरकर पिचकारियों से खेला जाता। आदिवासी इनके पत्तों पर लाख तथा रेशम के कीड़े पालकर गुजरबसर करते हैं।

आदिवासियों में होली दु:खों का पर्व

-अश्विनीकुमार आलोक-

झाड़खंड के उरांव एवं खरवार नामक आदिवासी समुदाय होली को दु:ख के पर्व के रूप में मनाते हैं। मान्यता है कि हिरण्यकश्यप की बहन होलिका का कुछ लोगों ने शीलभंग कर उसे जला डाला था।

होलिका के जलाये जाने के दूसरे दिन हिरण्यकश्यप ने उन हत्यारों को आदिवासी समुदाय के हवाले कर दिया। उन पर कालिख एवं कीचड़ फेंककर आदिवासियों ने बदला लिया। आदिवासी इसे फग्गू कहते हैं। महुआ के फूल को इस समाज के लोग फग्गू के पूर्व खाना वर्जित मानते हैं। फागुन महीने में महुआ के फूल गिरने लगते हैं, लेकिन आदिवासी इन्हें होली के पूर्व नहीं चुनते। दहन वाले दिन सामूहिक रूप से जंगल जाकर सेमल वृक्ष की तीन शाखाओं एवं तीन उपशाखाओं वाले तने को गांव की सीमा पर निर्धारित किये स्थान पर गाड़ा जाता है। रात्रि में सूखे पत्तों, पुआलों के बीच उसे रख कर जलाया जाता है।

दाह के बाद गांव के किसी युवा को एक कुल्हाड़ी दी जाती है। वह पांच फेरे लगाता। हर फेरे में कुल्हाड़ी से सेमल के तने को काटता है। माना जाता है कि होलिका के हत्यारों के हाथ पैर काट कर आदिवासी अपना गुस्सा निकालते हैं। कटी हुईं डालियों को लांघ कर उसी आग में भून कर चने एवं गेहूं की बालियों के दाने खाये जाते हैं। दूसरे दिन उसी राख को शरीर पर लगाकर नदी में स्नान किया जाता है। स्नान के बाद महुआ के फूलों की शराब स्थानीय देवता को चढ़ाई जाती है। इसे तपावन कहते हैं। उसके बाद उत्सव मनाया जाता है। रंग और अबीर की होली खेली जाती है। होली जिस राग में गाई जाती है उसे खद्दी कहते हैं।

कहीं कहीं सेमल की डाल को तीर मारने का भी रिवाज है। जिस युवक ने पहले वार में सेमल की डाल को नुकसान पहुंचाया, उसे एक साल के लिए गांव के सार्वजनिक महुआ फूल को चुनने का अधिकार दे दिया जाता है।

महाराणा मेवाड़ द्वारा विशिष्ट विभूतियों का सम्मान

महाराणा मेवाड़ फ़ाउण्डेशन द्वारा एक मार्च को आयोजित अंतरिक्ष विशेषज्ञ डॉ. के. कस्तुरीरंगन तथा न्यासी लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ द्वारा विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां प्राप्त 82 छात्रों को भामाशाह, राजसिंह तथा फतहसिंह सम्मान नवाजा गया।

सेंटपॉल स्कूल के छात्र अर्थांक आत्मज डॉ. तुक्तक भानावत को महाराणा फतहसिंह सम्मान देते डॉ. के. कस्तुरीरंगन तथा लक्ष्यराजसिंह मेवाड़

विशिष्ट सम्मानों में सर्वश्रेष्ठ पुलिस थाना चेचट, कोटा को महाराणा मेवाड़ विशिष्ट सम्मान, गौरवी सिंघवी को अरावली सम्मान, डॉ. मांगीलाल परिहार को राणा पूंजा सम्मान, उस्ताद साबिर सुल्तान खान को डागर घराना सम्मान, अमृतलाल सिरोहिया को सज्जनसिंह सम्मान, प्रो. बी.एल. भदानी एवं डॉ. प्रवीण पण्ड्या को कुम्भा सम्मान, प्रो. नीरज शर्मा एवं डॉ. जगदीश नारायण विजय को महर्षि हारीत राशि सम्मान, दादाराव बिल्होर, अनन्त विजय एवं प्रकाशचन्द शर्मा को महाराणा मेवाड़ सम्मान, पुरनोतादत्ता बहल को पन्नाधाय अलंकरण, देवीलाल धाकड़ को उदयसिंह अलंकरण, मनहर उधास को हकीम खाँ सूर अलंकरण, राज चेंगप्पा को हल्दीघाटी अलंकरण, तथा कर्नल जेम्स टॉड अलंकरण डॉ. नार्बर्ट पीबॉडी को प्रदान किया गया।

बधाई

कोटा में निखिल जारोली-दीक्षा का 24-25 फरवरी को मांगलिक विवाह सम्पन्न हुआ। निखिल की दादी सोबाकबाई, माता-पिता रीना-अशोक, बहिन सलोनी तथा दीक्षा के माता-पिता इन्दिरा-कैलाश खण्डेलवाल ने सभी नेगचारों के साथ विधिपूर्वक वैवाहिक रीतिरिवाज निभाये।

बीकानेर से सुधा, उनके पुत्र अमिताभ-कल्पना, प्रमोद-अनिता तथा जिनेश, राजा, वैभव नागोरी की ओर से मायरा लाया गया। शब्द रंजन परिवार के डॉ. महेन्द्र, डॉ. तुक्तक-रंजना, अर्थांक भानावत तथा डॉ. कविता-सतीश, अनिशा, डॉ. कहानी-जितेन्द्र एवं काव्या मेहता ने भाग लिया।

होली के हड़कंपे

कैलाश 'मानव' :

सत्यवादी हरिश्चन्द्र हुए, धरती पर बेजोड़।
दानवीर से कर्ण की, नहीं किसी से होड़।।
कलयुग में कैलाशजी, ऐसी खींची रेख।
सेवाव्रती सिरमौर बन, रखदी सबकी टेक।।
रखदी सबकी टेक, बने नर से नारायण।
स्तंभित हैं दिव्यांग, सकल शुभ जन तारायण।।

डॉ. राजेंद्रमोहन भटनागर :

अपने से ज्यादा प्रभु, सृजन किया बहु रूप।

रात-रात लिखते रहे, छांह न देखी धूप।।
सहज सरल सबके विरल, राग रंग भरपूर।
जितने सबके पास हैं, उतने ही अति दूर।।
नट नागरजी धन्य हैं, भटनागर बड़ भाग।
घट नागर सबके बसैं, मणिधारी के नाग।।

डॉ. देव कोठारी :

देवपुरुष धरती पर आते, बदल-बदल कर भेष।
जान न पाते किंतु हम उन्हें, रहो लगाते गैस।।

किंतु यहां भी तो हैं वैसे,
सीधे सादे सरलमना।
देवतुल्य ही समझो उनको,
किंतु कौतूहल लिए घना।।
रामचंद्र कह गये सिया से, कलयुग में भी होते हैं।
कांटों के क्यारे-क्यारे में, फूल बना भी बोते हैं।।

डॉ. भगवतीलाल व्यास :

तुम सब हो कविता कथा कहानी किस्से
रामदेव के नुस्खे

व्यंग्य गोलगप्पे गल्पों के
किंतु कहां हो झोला डाले धुंआ छोड़ते
सिकरेटों के चंचल चकवे।
ढीला पाजामा, पेंट, लटकता नाड़ा
लगते हैं अलबेले ढेले
छेल छबीले, प्रवासी पंछी से, कहां मिलोगे बंधु
कई मिलने को फकवे।।

डॉ. पुरुषोत्तम छांगाणी :

केर सांगरी की धरती, जिंक सी रेशमी मूमल जैसी।

भेलमेल हो गई बाजरे में मक्की की,
विडंबना कैसी-कैसी।।
अमराणा का प्रेम रात हर मिलने आता।
हाड़ी रानी का इधर पराक्रम माथा पाता।।
ऊंट पर धक्कमधक्का।
होर्स पर हक्का बक्का।
लगाता कैसा छक्का।।

डॉ. महेन्द्र भानावत :

लोककला का छौंक लगाते, कहां-कहां तक जाते।
अपनी पैठ बनाते, खुशबू अनीबनी तक पाते।।

चोली और घाघरे का साहित्य चुनौती झेली।
खूब लिखा शक्कर से शतगुन,
करदी गुड़ की भेली।।
सामर नंद प्रकाश चिंतारे,
संस्कृति के गुणधानी।
कीर्तिदेव कल्लाजी के हैं, मातृहृदय मस्तानी।।

डॉ. दिलीप धींग :

लब्धि हाथ ऐसी लगती है,
जो चाहो सो वरण करो।

भूंज गांव में नहीं भूंगड़ा,
किंतु धूल धो स्वरण भरो।।
चकित सुदामा होते हैं,
पर कृष्ण सुदर्शनधारी हैं।
बालपने की अन्यामन्या की,
मैत्री मनोरथकारी है।।
युगों-युगों तक यशगाथाएं, धरती जिनकी गाती है।
विजय पताका उनकी ही तो, जगह-जगह लहराती है।।

कमर मेवाड़ी :

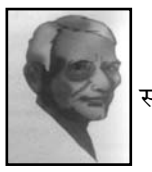

उठापटक जितनी करनी थी, करली भैय्या।
उड़ा लिये घोड़े, तोतों की आंख बदल दी।।
संबोधन के घाट, नाव अब रूक-रूक चलती।
चंदन की सुवास न जाने हवा हो गई
गांठ पड़ गई गांठों में, गंठाती हल्दी।।

डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ :

काव्य गोष्ठियों जलसों मंचों पर,
पहले कविता झरती थी।

कवि कम थे पर श्रोताओं में,
जोश जवानी दम भरती थी।।
अब कवियों की जगह-जगह,
उग आई खरपतवार सखी री।
युगधारा ही बदल गई तो,
फांकामस्ती और फकीरी।।
ऐसे में मेरी कविता को,
कौन सुनेगा समझेगा।
कलम! करम पर हाथ न डारो,
कोई दर्द न दमकेगा।।

किशन दाधीच :

छंद बिना कविता लगै, पांख बिना ज्यूं मोर।
रंग बिना रातां लगै, चहक बिना ज्यूं भोर।।
कविता में रज न हुए, जोश न दे ज्यूं पाणी।
सूनो घर ओपे नहीं, तेल बिना ज्यूं घाणी।।
जठै किशन है, गीत है, यारबाज बहुरंग।
ज्यों वांरी संगत करै, रंगत अंगत अंग।।

राजकुमार जैन 'राजन' :

बालवंदना करिये उसको,
जिसके बाहर भीतर बालक।

घूम-घूम कर जो सुध लेता,
सृजनशील संवादी चालक।।
प्रेरक है, प्रबंध-पटु भी है,
पुरस्कार देता, लेता भी।
लिखो, छापूंगा, स्कूलों में,
दूंगा बच्चों को कहता भी।।
ऐसे राजकुमार हमारे,
सबके राजन हैं सने हुए।
बीमा की पोलिसी जैसे,
स्नेहिल सकुनी बने हुए।।

डॉ. इकबाल 'सागर' :

सागर नहीं, महासागर हो, गागर में सागर हो।

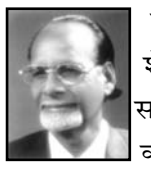

मोतबीर हाजी मस्ताना, यारबाज आगर हो।।
शेरोशायरी, गजल गायकी के अव्वल उस्ताद।
सभी तरह के शौक पालते, करते नहीं विवाद।।
कट्टरपंथी नहीं कदापि, सर्वधर्म मैत्री चाहक।
आप एक हैं किंतु कई हैं, श्रीवर के, गुण के गाहक।।

डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना :

अकादमी साहित्य की, गई हवा में डूब।
जब प्रकाश आतुर थे, लगे ठहाके खूब।।
वर्षों तक जाजम जमीं, नंदवाना के काल।

समारोह संगोष्ठियों, के मत पूछो हाल।।
अब नंदवाना जी कहां, वे फल और वे डाल।
तंदूरे टूटे पड़े, खस्ता हाल बेहाल।।
बाबा अब ढाबा हुए, प्यादे हुए वजीर।
फूल न खुशबू दे रहे, तरकश रहे न तीर।।
नारायण भी डोलते, नहीं उदयपुर वास।
खासमखास रहे नहीं, भागमभाग प्रवास।।
फंद गये, दंगल गये, सजनी सभा विहीन।
कौन मनावे अनमना, सुसा फूंकत बीन।।
कहां लगे, किसके लगे, कैसे कितनी रोली।
समझ न पाता हूं सखे, मने सखी संग होली।।

शैलेष व्यास :

सदा हरे, हर-हर भजे, राजस्थान महान।
जय-जय राजस्थान हो, जय चन्द्रेश जहान।।
बड़ी पहल, पहली पहल, पहला है अखबार।

जिसमें ठालेरामजी, की चलती थी धार।।
चलते-चलते पथिक छोड़ते,
कूंपल की पिचकारी।
व्यास भगवती आईना का,
चलका देते भारी।
अब सब खुल्लमखुला है।
बेगाना अब्दुल्ला है।।

डॉ. शकुंतला पंवार :

वह शकुंतला और थी, कण्व ऋषि संतान।
यह शकुंतला और है, शाकुंतलम् सुजान।।

गुरुमां का गौरव लिए,
कलालोक की खान।
सामर देवीलाल की,
ख्याति लब्ध पहचान।।
देश-देशांतर में दीक्षित हैं, शिष्याएं दे ताली।
कलानैत्री को मुजरा करतीं, हर होली दीवाली।।

डॉ. तुक्तक भानावत :

अखबारों में आगे-पीछे, दायें-बायें,

परछाई से तुके बेतुके।
आंख झांक करते खबरों में,
देख सको तो मिल जायेंगे लुके।।
हलचल है जीवन में जिनके,
जो हलचल भी देते।
पत्रकार सरकार सभासद,
असरकार रस लेते।।
पार्श्वनाथ कल्लाजी जिनके, पार्श्वकल्ला है।
कला-लोक की अजब गजब की, लोक-कला है।।

भूपेंद्रकुमार चौबीसा:

राजा हो अखबार के, पूर्ण समर्पण लाल।
तुम्हीं रीढ़ की हड्डी हो,

तुम्हीं हो इसकी ढाल।।
जब देखो तब ही तुम्हीं,
चिंतातुर हो भूप।
बैठ खबर को छानते, जैसे काता सूप।
धन्य हुए शैलेषजी, सबसे चिंता मुक्त।
खुल्लम खुल्ला दे दिया, यही सोच उपयुक्त।।
नाम चल रहा पहला है, अखबार उदयपुर संभागी।
जय-जय राजस्थान, सभी हम हैं सचमुच के बड़भागी।।

संप्रति संस्थान :

संप्रति के सौजन्य से, होली का शुभराज।
विश्ववंद्य भारत के सब हों, नव विकास के साज।।

-संप्रति के सौजन्य से
डॉ. तुक्तक भानावत, महासचिव, संप्रति संस्थान

इंडिगो व एचडीएफसी बैंक में साझेदारी

उदयपुर। भारत के अग्रणी कैरियर इंडिगो ने मास्टरकार्ड द्वारा पावर्ड अपने पहले ट्रैवल क्रेडिट कार्ड -'क-चिंग' के लॉन्च के लिए भारत के अग्रणी एचडीएफसी बैंक के साथ साझेदारी की है। दो वेरिएन्ट्स- 6ई रिवॉर्ड्स और 6ई रिवॉर्ड्स एक्सएल में यह नया क्रेडिट कार्ड लॉन्च किया गया है। कई फायदों के साथ यात्रा का उत्कृष्ट अनुभव प्रदान करेगा, साथ ही कार्ड-धारक यात्री अपनी डोमेस्टिक और इंटरनेशनल यात्राओं पर बेजोड़ रिवॉर्ड्स का फायदा भी पा सकेंगे। उपभोक्ता वेरिएन्ट के आधार पर एक्टिवेशन करने के बाद रु 1500 से रु 3000 के बीच कॉम्प्लीमेंटरी एयर टिकट्स का लाभ उठा सकते हैं। इन क्रेडिट काड्र्स के ज़रिए उपभोक्ता इंडिगो की टिकट खरीदने पर 6ई रिवॉर्ड्स के फायदे पा सकते हैं। वे फीचर्ड पार्टनर्स के साथ डाइनिंग, शॉपिंग, ट्रांसपोर्ट, मेडिकल व्यय पर अतिरिक्त 10-15 फीसदी 6ई रिवॉर्ड्स भी पा सकते हैं।

चपलोत को युगांडा का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार

उदयपुर। विशिष्ट अप्रवासी भारतीय (एनआरआई) कारोबारी राजेश चपलोत को युगांडा के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार (गोल्डन जुबली मेडल-सिविलयन्स) से सम्मानित किया गया। कंपाला में हुए समारोह के दौरान यह पुरस्कार युगांडा के राष्ट्रपति योवेरी मूसेवेनी ने चपलोत को व्यापार-वाणिज्य को बढ़ावा देने, समाज सेवा और भारत-युगांडा के संबंधों को बेहतर बनाने के क्षेत्र में अर्जित महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए प्रदान किया। चपलोत को पिछले वर्ष वाराणसी में भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने भी सम्मानित किया था। चपलोत ने कहा कि मैं अपनी जन्मभूमि (भारत) और कर्मभूमि (युगांडा), दोनों जगह के माननीय राष्ट्रपति से पुरस्कार प्राप्त कर सम्मानित महसूस कर रहा हूं।

वर्ल्ड अरबन फोरम में पुणे, उदयपुर ने की शिरकत

उदयपुर। बर्नार्ड वैन लीयर फाउण्डेशन (बीवीएलएफ) के साथ पुणे और उदयपुर शहरों ने अबू धाबी में यूएन-हेबिटेट्स के वर्ल्ड अरबन फोरम के 10वें सत्र में शिरकत की, ताकि यह जाना जा सके कि शहरों को छोटे बच्चों और उनके देखभालकर्ताओं की योजना एवं प्रन्धन पर पर ध्यान देने की आवश्यकता है। फोरम में, फाउण्डेशन के साथ-साथ इसके भागीदार शहरों पुणे और उदयपुर ने अपने अनुभव को स्पष्ट रूप से बताया कि कैसे सार्वजनिक स्थानों, मोबिलिटी और सेवाओं को डिजाइन करते समय शिशुओं, बच्चों और उनकी देखभाल करने वालों को उनकी आवश्यकताओं पर ध्यान केन्द्रित करने से लाभ होता है।

बर्नांड वैन लीर फाउण्डेशन की कार्यकारी निदेशक सिसिलिआ वेका जोन्स ने कहा कि बच्चों और परिवारों की उपस्थिति अक्सर शहर की जीवंतता और गतिशीलता का एक पैमाना है। दुनिया भर में शहरी परिवार, विशेष रूप से निर्धनता या अनौपचारिक बस्तियों में रहने वाले, अधिक से अधिक लोग इन परिवर्तनकारी तरीकों से लाभ जैसे अधिक सुलभ सेवाओं, परिवहन, और सुरक्षित, स्वच्छ, और छोटे बच्चों के खेलने के लिए और परिवारों को इकट्ठा करने के लिए हरे भरे मैदानों का लाभ उठा सकते हैं।

डेथ क्लेम मिलेगा एक ही दिन में

उदयपुर। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ के क्लेम फॉर श्योर योजना में डेथ क्लेम एक दिन में वापस कर दिया जाएगा।

योजना के लिए दावा के शुभारंभ के साथ, कंपनी ने इस अविश्वसनीय नुकसान में बीमा प्राप्त लोगों के परिवारों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए शुद्ध योजना के लिए दावा शुरू किया है। तीन साल से लगातार चल रही बीमा पोलिसी पर कोई चेक नहीं लगाया जाएगा और धन वापसी की राशि 1.5 करोड़ रुपये के भीतर होनी चाहिये। आवेदक को यह धन वापसी तेजी से प्राप्त करने के लिए सभी आवश्यक दस्तावेजों के साथ आवेदन करना होगा।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस के उपप्रबंध निदेशक पुनीत नंदा ने कहा कि यह हमारी नीति का ग्राहक आधार है। यह प्रक्रिया आसान हो गई है क्योंकि, यह मृत्यु के दावों की वापसी को गति देने के लिए प्रौद्योगिकी पर निर्भर है।

फेफड़े की गांठ का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पारस जे.के हॉस्पिटल में कार्डीओथोरैसिक सर्जन डॉ. चंद्रशेखर, लेप्रोस्कोपिक सर्जन डॉ. सपन जैन, डॉ. दीपक बजाज, डॉ. नितीन कौशिक की टीम ने दूरबीन विधि से बिना किसी चिरफाड़ के फेफड़े की गांठ का सफल ऑपरेशन किया है। डॉ. सपन जैन ने बताया कि 65 वर्षीय अब्दुल राशिद (परिवर्तित नाम) को कई महीनों से साँस लेने में तकलीफ और छाती में दर्द की शिकायत थी। उन्होंने उदयपुर व अन्य शहरों के कई चिकित्सकों को दिखाया पर कोई फायदा नहीं हुआ। बाद में पारस जे. के हॉस्पिटल में जांच में मरीज के फेफड़े में गांठ (बुल्ला) का पता चला। मरीज को डायबिटिज भी थी जिसके कारण इस ऑपरेशन में जोखिम ज्यादा थी। इन सबको ध्यान में रखते हुये अत्याधुनिक दूरबीन तकनीक का प्रयोग किया व फेफड़े के अन्दर की गांठ को बाहर निकाला। मरीज अब पूर्ण रुप से स्वस्थ है। ऑपरेशन के फायदों के बारे में डॉ. सपन ने बताया कि इसमें मरीज के बड़ा चीरा नहीं लगाया जाता है। इससे रिकवरी जल्दी होती है। रक्त आधान की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ऑपेरशन से होने वाले निशान भी ना के बराबर होते हैं। जल्दी स्वस्थ होने के कारण मरीज अपने कार्यस्थल पर जल्दी लौट पाता है। अस्पताल के डायरेक्टर विश्वजीत ने बताया कि पारस जे. के. हॉस्पिटल में विश्वस्तरीय सुविधायें उच्चतम तकनीक व अनुभवी टीम है। अब उदयपुरवासियों को शहर के बाहर जाने की आवश्यकता नहीं है।

तामीर सोसायटी के 28वें अवार्ड समारोह में 29 विभूतियां सम्मानित

उदयपुर। तामीर सोसायटी द्वारा 16 फरवरी को सुखाड़िया यूनिवर्सिटी के न्यू गेस्ट हाऊस ऑडिटोरिम में 28वां अवार्ड्स समारोह आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल फाउंडेशन के ट्रस्टी महाराजकुमार लक्ष्यराजसिंह मेवाड़, महारानी कंवरानी निवृत्तिकुमारी मेवाड़, रेहाना शब्बीर, अलख नयन मंदिर आई हॉस्पिटल के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. एल. एस. झाला, रॉयल मोटर्स प्रा. लि. के मेनेजिंग डायरेक्टर शेख शब्बीर के मुस्तफा तथा वाइट गोल्ड कॉर्पोरेशन लि., सावा के मेनेजिंग डायरेक्टर प्रो. सय्यद साजिद अली थे।

सोसायटी के संस्थापक डॉ. इकबाल 'सागर' के अथक प्रयासों की प्रशंसा करते हुए लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ ने कहा कि समय का बोलबाला हर युग में मूल्यवान रहा। पहले जब घड़ी नहीं थी तब वक्त था। अब घड़ी है तो वक्त नहीं है। वक्त आता है, वक्त जाता है। उसे संभाल कर रखिये। वक्त बेवक्त काम आता है। महाराज कंवरानी निवृत्तिकुमारी ने ऐसे आयोजनों से प्रेरणा लेने की कामना की। शब्बीर के मुस्तफा ने विविध क्षेत्रों की प्रतिभाओं की परख कर पुरस्कृत करने की परम्परा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। डॉ. एल. एस. झाला तथा डॉ. लक्ष्मी झाला ने सामाजिक अभ्युत्थान में ऐसे कार्यक्रमों की उपलब्धि पर बल दिया। इस दौरान श्रीमती रेहाना शब्बीर ने भी विचार रखे।

समारोह में 29 विभूतियों को महाराजकुमार लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ तथा महारानी कंवरानी निवृत्तिकुमारी मेवाड़ ने अब्दुल्लाह खान, मो. इलियास मुलतानी, मो. छोटू कुरैशी, आबिद खान पठान, श्रीमती इकरा फातिम, सुश्री सय्यदा जन्नत बानो, श्रीमती रूखसाना बानो, श्रीमती सना फातिमा अशरफी को ख्वाजा ग़रीब नवाज अवार्ड, महेन्द्रपालसिंह छाबड़ा को क़ौमी एकता अवार्ड, मिस शहनाज खान, डॉ. लक्ष्मी झाला, हाजी आशिक हुसैन ताज, डॉ. तुक्तक भानावत, जावेद खान को तामीर स्पेशियल अवार्ड, हाजी अख्तर पटेल, हाजी सलीम मो. अगवानी को खादिम-ए-हुज्जाज, डॉ. अख्तर बानो, श्रीमती हिना बानो, सुश्री जीनत परवीन, मास्टर फजलुर रेहमान, नादिरा शेख, शीबा हैदर, नाजिमा को डॉ. ज़ाकिर हुसैन अवार्ड तथा डॉ. आदिल खान, डॉ. (मिस) आफरीन जहाँ, डॉ. मो. इरशाद मन्सूरी, इंजीनियर हरशान निहाल खान, इंजीनियर इजहार हुसैन, सुश्री मिदहत अयाज शेख को मौलाना आज़ाद अवार्ड से सम्मानित किया।

प्रारम्भ में इकरा फाजिया ने कुरान शरीफ के प्रथम श्लोक से मधुर शुभारम्भ किया। तामीर सोसायटी के चैयरमेन डॉ. इकबाल 'सागर' ने पिछले 28 वर्षों की सोसायटी की उपलब्धियों से अवगत कराते विशिष्टजनों का भावभीना अभिनन्दन-सम्मान किया। संयोजक मोहम्मद सिद्दीक नूरी ने किया। अध्यक्षता कर रहे प्रो. सय्यद साजिद अली ने आभार व्यक्त किया।

समारोह में एडवोकेट फतहलाल नागौरी, मोहम्मद शरीफ छीपा, सलीम खान, डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. खुर्शीद, डॉ. जमिला, डॉ. खलील अगवानी, इंजीनियर शफी मोहम्मद, नरेन्द्र शर्मा, रतन सुखवाल, अकबर खां शाद की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

विटारा ब्रेज़ा लॉन्च

उदयपुर। मारूति सुजुकी इण्डिया लि. ने नई विटारा ब्रेज़ा के लॉन्च की घोषणा की जिसका अनावरण ऑटो एक्स्पो 2020 में किया गया था। कॉम्पैक्ट एसयूवी विटारा ब्रेज़ा का नया वर्ज़न अपने स्पोर्टिनेस्स, बोल्ड लुक, मजबूत बॉडी, प्रीमियम इंटीरियर और नए फीचर्स के साथ शानदार अनुभव प्रदान करता है। 1.5 लीटर के-सीरीज़ बीएस6 इंजन से पावर्ड, विटारा ब्रेज़ा निश्चित रूप से ग्राहकों को बेहतरीन अनुभव प्रदान करेगी। यह कॉम्पैक्ट एसयूवी 5-स्पीड मैनुअल और एडवान्स्ड ऑटोमेटिक ट्रांसमिशन विद स्मार्ट हाइब्रिड के साथ आती है। मैनेजिंग डायरेक्टर एवं सीईओ केनिची आयुकावा ने कहा कि विटारा ब्रेज़ा पिछले 4 सालों में बेहद पावरफुल ब्राण्ड के रूप में उभरी है। इसकी मजबूत, अरबन एवं प्रीमियम अपील को बनाए रखते हुए नई विटारा ब्रेज़ा को पहले से और भी बोल्ड, स्पोर्टी और अधिक पावरफुल अवतार में पेश किया गया है। हमें विश्वास है कि नई विटारा ब्रेज़ा अपने पूर्ववर्ती मॉडल की सफलता को और बढ़ाएगी और ग्राहक इसे खूब पसंद करेंगे। नई विटारा ब्रेज़ा तीन नए ड्यूल कलर विकल्पों में पेश की गई है- - सिजलिंग रेड विद मिडनाइट ब्लेक रूफ, टॉर्क ब्लू विद मिडनाइट ब्लेक रूफ एवं ग्रेनाइट ग्रे विद ऑटम ओरेन्ज रूफ।

वोडाफोन टर्बोनेट 4जी राजस्थान का सबसे तेज़ 4जी डेटा नेटवर्क

उदयपुर। वोडाफोन टर्बोनेट 4जी को राजस्थान में सबसे तेज़ 4जी नेटवर्क बताया गया है। ब्रॉडबैण्ड टेस्टिंग एवं वेब-आधारित डायग्नॉस्टिक ऐप्लीकेशन्स में ग्लोबल लीडर ओखला के अनुसार अक्टूबर-दिसम्बर 2019 की अवधि के दौरान इसकी डाउनलोड स्पीड सभी अन्य ऑपरेटरों से अधिक रही है। ये परिणाम राजस्थान में 4जी उपभोक्ताओं द्वारा किए गए स्पीड टेस्ट के ओखला विश्लेषण पर आधारित हैं।

पमेश गुप्ता, बिजनेस हैड- राजस्थान, वोडाफोन आइडिया ने कहा कि हमें खुशी है कि हमें ओखला द्वारा सर्कल के सबसे तेज़ 4जी नेटवर्क का दर्जा दिया गया है। यह वैरिफिकेशन हमें प्रेरित करता है कि हम अपने अमूल्य उपभोक्ताओं के लिए नेटवर्क कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने और उन्हें उत्कृष्ट डिजिटल अनुभव प्रदान करने के प्रयासों को जारी रखें। इससे हमारे उपभोक्ता वोडाफोन प्ले ऐप के माध्यम से सोनी लिव, ज़ी5, शेमारो, होई चोई आदि का लुत्फ़ उठा सकते हैं। विशांत वोरा, चीफ़ टेक्नोलॉजी ऑफिसर, वोडाफोन आइडिया लि. ने कहा कि हम हमेशा से नेटवर्क के उत्कृष्ट अनुभव पर ध्यान केन्द्रित करते रहे हैं, इसी के मद्देनज़र हम अपने नेटवर्क का आधुनिकीकरण कर सशक्त फ्यूचर रैडी 4जी. नेटवर्क का निर्माण कर रहे हैं।

सुरमय लेखन के.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

अचानक खेल के बीच दूल्हे को देख सब चकित रह गये किंतु दर्शकों ने उसे भी खेल का एक हिस्सा ही समझा। ढोलक वाले ने इशारे-इशारे में अपनी गलती सुधार ली और दूल्हा जैसे आया वैसे ही वहां से चल पड़ा। खेल में कोई व्यवधान नहीं आया और खेल अपनी गति से आगे बढ़ता रहा।

रात्रि को चित्तौड़ के पास ओंडूड गांव के सरपंच के खेत पर रातिजगे का कार्यक्रम था जहां हम बड़ी देर तक विविध भजनों के साथ भजन मंडली में नानजी का नृत्य-गान देख अभिभूत होते रहे। वहां यह रंग इतना चढ़ा कि सरपंचजी स्वयं बड़ी देर तक नानजी के साथ नृत्यमग्न हुए देवाराधना से जुड़ी सांगीतिक नृत्य अदायगियों की सृष्टि करते रहे। जवाहर कला केंद्र, जयपुर में जब वर्मा साहब डायरेक्टर थे तब 2 जून 1990 के पत्र में मुझसे सादों के बारे में जानकारी चाही। उनका लिखा पत्र था-

प्रियश्री महेन्द्रजी,

आपसे डूंगरपुर के सादों अथवा साधों के बारे में एक लेख की प्रतिलिपि, चर्चा के अनुसार आपको भेज रहा हूं। इसके लेखक श्री उमेशचंद्र मिश्र हैं जो एक जमाने में 'सरस्वती' के संपादक हुआ करते थे। जिस संकलन से मैंने यह लेख लिया है, उसका नाम था- 'अतीत के बिखरे पन्ने'। डूंगरपुर इत्यादि के साधों के बारे में सूचना यदि आप मुझे भिजवा सकें तो अनुगृहीत होऊं गा। शुभाकांक्षी।

आपका

विजय वर्मा

सादों के बारे में जो जानकारी वागड़ प्रदेश में घूम-फिरकर, सादों से मिलकर एकत्र की थी वह उन्हें लिख भेजी। मावजी अन्तर्ज्ञानी थे। असाधारण वैचित्र्य लिये थे। अलौकिक पुरुष थे। उन्होंने अपनी भौंहों से चोपड़े लिखे और चोटी की मरोड़ी दे, विविध रंगों से चित्र बनाये।

वर्माजी के मेरे पास कई पत्र संभाले हुए हैं। वे वर्षों से मुझे नये वर्ष पर शुभकामना-पत्र भेजते रहे हैं। मोटे कागज पर प्रत्येक वर्ष का पत्रक विशिष्ट नृत्य का रेखाचित्र और उसके नीचे उसका संक्षिप्त परिचय लिये है। यथा- भीलों का घूमरा नृत्य, पूर्वी राजस्थान में प्रचलित हेला ख्याल का प्रतियोगी समूह नृत्य, पीपली नृत्य का युगल दृश्य, राई नृत्य, गरासियों का वालर नृत्य।

20 मार्च 1991 को चित्तौड़ के चित्तौड़ीखेड़ा गांव में दिन को भवाई कलाकारों से हमने भेंट कर उनके ख्याल-तमाशों के बारे में जानकारी प्राप्त की जिससे लगा कि यह जाति अपने कला-करिश्मों के कारण सर्वथा अजूबा प्रदर्शन कर अन्य जातियों से अतुलनीय बनी हुई है।

वर्मा साहब के साथ की, दूर-साथ की और भी कई स्मृतियां सरजीवित हो सकती हैं,यादों में खोकर देखने पर। वे जहां भी रहे उस विभाग को ही लाइव, लिविंग कर दिया। दिल्ली में भारत के जनगणना आयुक्त महापंजीयक थे तब उन्होंने अपनी लिखी लिविंग म्युजिक ऑफ राजस्थान पुस्तक मुझे भेजी। 12 गुणा 12 इंच वृहद् साइज की इस पुस्तक के साथ उतनी ही बड़ी एलपी रेकार्ड भी थी। कहां जनगणना और कहां राजस्थान के लोकसंगीत की स्वरलहरियों की स्वर्गिक सौम्य और स्नेहिल स्वरलहरियां !

वर्माजी के लिखे पत्रों को जब मैं खंगालता हूं तो लगता है, वे हर पत्र कुछ-न-कुछ विशिष्ट जानकारी देने अथवा लेने के लिए ही लिखते। इन पत्रों में उनके द्वारा किये जा रहे विशिष्ट उपलब्धिमूलक लेखन-कार्य की जानकारी तो रहती ही, और भी इधर-उधर की महत्वपूर्ण जानकारी भरी रहती। एक पोस्टकार्ड में उन्होंने लिखा- 'मैं रिलीजियस इरोटिक स्क्ल्पचर ऑफ इंडिया पर एक पुस्तक लिख रहा हूं। इस संबंध में ईलोजी के रेखाचित्र या चित्र की जरूरत है। कहां छपा है, कृपया बतायें। और कोई लोकजीवन से संबंधित प्रासंगिक जानकारी आपके ध्यान में हो तो कृपया उसके बारे में भी बतायें।' यह कार्ड 21 अगस्त 1996 का लिखा है।

एक और पोस्टकार्ड 7 मार्च 2001 का लिखा मेरे पास सुरक्षित है जिसमें उन्होंने लिखा- 'मैं बाहर था। उत्तर में विलंब के लिए क्षमाप्रार्थी हूं। ईश्वर सब तरह से आपकी परीक्षा ले रहा है, लेता रहा है। इन सबके मुकाबले आपका पुरुषार्थ धन्य है। आपने अकेले दम भारतीय लोकसाहित्य और लोकजीवन के अध्ययन के इतिहास में अपने लिए गौरवपूर्ण स्थान बनाया है। ईश्वर आपको शक्ति और कर्मरत बने रहने की प्रेरणा दे। पाबूजी की पड़ पुस्तक मुझे मिल गई है। लोककलाओं का आजादीकरण की प्रति हो सके तो भेजें।'

सस्नेह

विजय वर्मा

वर्माजी जब जवाहर कला केंद्र के महानिदेशक एवं सचिव थे तब केंद्र की कार्यप्रणाली का विस्तार कर उसकी विशिष्ट पहचान बनाई। उस समय 22 नवंबर 1991 को एक पत्र उन्होंने मुझे लिखा-

प्रिय महेन्द्रजी,

जवाहर कला केंद्र, जयपुर में एक बहुआयामी कला केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसका संक्षिप्त परिचय संलग्न है। हमें प्रसन्नता होगी, यदि आप इसकी कार्यक्रम सलाहकार समिति, डोक्युमेंटेशन के सदस्य के रूप में अपनी सहभागिता केंद्र को प्रदान करेंगे। सहमति की प्रतीक्षा में,शुभाकांक्षी,

आपका

विजय वर्मा

वर्माजी के ये पत्र मात्र लिखने के पत्र नहीं हैं। सुख ही के साथी और साथ निभानेवाले नहीं हैं और न शुभाकांक्षात्मक औपचारिकता के खाली बैठे या बैठे ठाले सिकोतरे हैं बल्कि एक परिवारजनित आत्मीयता से जुड़नेवाले, सुख को सवाये करने वाले और दुख में नीर भरे बादल बन सहानुभूति का सींचन देने वाले हैं। उदाहरणार्थ नई दिल्ली से 26 नवंबर 1985 को लिखा एक पत्र द्रष्टव्य है-

प्रिय महेन्द्रजी,

पहले रंगायन के संपादक के रूप में आपका नाम और अब कलामंडल के निदेशक के रूप में आपका चित्र देखकर अपार सुख और संतोष का अनुभव हुआ। दिखावे से दूर, जीवन से जुड़े रहकर काम करने वाले बिरले होते हैं। उनमें से एक कलामंडल का निदेशक है। यह लोक के प्रेमी और हितैषी लोगों के लिए अत्यंत सुखद है।

आपका

विजय वर्मा

वर्माजी का संबंध भारतीय लोककला मंडल से भी अति घनिष्ट रूप में जुड़ा रहा। जब-जब भी हमने कोई विशिष्ट आयोजन, मेला, सम्मेलन, संगोष्ठी, समारोह आयोजित किया, वर्मा साहब ने अपनी पूर्ण भागीदारी निभाई और अपने मूल्यवान विचारों से लाभान्वित किया।

किसी मेले में घूमती-झूमती चकडोलर, घोड़ा डोलर की तरह यादों का पिटारा भी बड़ी मुश्किल से खुलता है। कभी-कभी सौ चाबी लगाने पर भी वह नहीं खुलने की अड़ पकड़ लेता है और जब खुल पड़ता है तो खुल्लमखुल्ला होता रहता है तब यत्न करने पर भी बंद होने का नाम नहीं लेता। मैं और भी साहबों के साथ घूमा हूं लेकिन वर्मा साहब के साथ वाली यादें अपने में अनूठी बनी हुई हैं।

डॉ. देव कोठारी को साहित्य अकादमी पुरस्कार

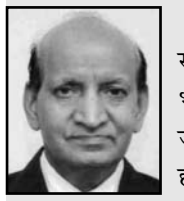

उदयपुर निवासी वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. देव कोठारी को साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा सन् 2019 का राजस्थानी भाषा का 50 हजार रूपये का अनुवाद पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। यह पुरस्कार उन्हें कन्नड़ भाषा के महाकवि नाडोज हम्पा नागराज्जया द्वारा प्रणीत 'चारू वसंता' महाकाव्य का राजस्थानी भाषा में अनुवाद करने पर दिया गया है। इस महाकाव्य का तेलुगु, उड़िया, मराठी, गुजराती, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू आदि नो भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। बधाई।

-मयंक कोठारी

होली के रंग

आज मिलकर बाजी तुमने हमने खेली होली में।
करते-करते हल करली रंगों की पहेली होली में।।
चाहत की पिचकारी हम ने हाथों में लेली होली में।
रंगों की बोछार ने कर दी प्रीत नवेली होली में।।
चेहरों पे दमकती है खुशियां पोशाकों पे हैं रंगों की फबन।
मिट्टी के मकाँ भी रोशन हैं चमकी है हवेली होली में।।
समझोते का आया है मौसम आपस की लड़ाई खत्म करें।
मिलजुल कर रहें हम सब, धो डालें चादर है जो मेली होली में।।
चुपके से लगता है कोई और कोई जबर्दस्ती करके।
रंगों से भरी आती है नजर हर एक हथेली होली में।।

-डॉ. इकबाल 'सागर'

डॉ. आचार्य की स्मृति में कवि सम्मेलन

राजस्थान संस्कृत अकादमी द्वारा 15 फरवरी को प्रख्यात साहित्यकार डॉ. हरिराम आचार्य की स्मृति में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन में रमाकान्त शुक्ल, अभिराज राजेन्द्र मिश्र, बलबीरसिंह करूण, विनीत चौहान, वागीश दिनकर, कमलेश शर्मा, डॉ. प्रवीण शुक्ल तथा राजीव आचार्य द्वारा रामायण-महाभारत के राम, शबरी, कैकयी, कर्ण, भीष्म, द्रोणाचार्य, अर्जुन आदि पात्रों पर केन्द्रित रचनाएं प्रस्तुत कर रसिकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुख्य अतिथि माननीय न्यायाधीश अभय चतुर्वेदी तथा अध्यक्ष पुलिस महानिदेशक एसबी डॉ. आलोक त्रिपाठी थे।

- डॉ. भावना आचार्य

फार्म : 4

(नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशक का स्थान	:	उदयपुर
2.	प्रकाशन की अवधि	:	पाक्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	लोकेश कुमार आचार्य
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस, 311 ए, चित्रकूट नगर भुवाणा, उदयपुर
4.	प्रकाशक का नाम	:	डॉ. तुक्तक भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
5.	सम्पादक का नाम	:	रंजना भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों	:	डॉ. तुक्तक भानावत 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर

मैं डॉ. तुक्तक भानावत एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

उदयपुर — डॉ. तुक्तक भानावत

दिनांक : 29.2.2020 — प्रकाशक के हस्ताक्षर

गुजराती लोकनृत्यों में होली

-डॉ. तुक्तक भानावत-

गुजरात अपने सांस्कृतिक वैभव के कारण अपनी अलग पहचान रखता है। यहां की धरती ने कहीं युद्ध का उन्माद देखा तो कहीं समुद्री लहरों के उफान से नाता जोड़ा। इधर के नृत्यों में अनुष्ठानों की बहार देखने को मिलती है। इस प्रदेश में कच्छ उत्सव, मोढ़ेरा उत्सव, पाटन उत्सव, सिद्धपुर उत्सव, तरनेतर मेला, साम्राज्य मेला, जन्माष्टमी, नवरात्रा तथा पतंग उत्सव ने अन्य प्रदेश के लोगों को भी मोहित किया है। होली का त्यौहार भी कई लोकनृत्यों की इन्द्रधनुषी रंगावलियों से परिपूर्ण मिलता है।

गर्वीला गरबा और रसदार रास :

गुजरात का गरबा और रास बहुप्रसिद्ध है। कई तरह के रास नृत्यों में डांडियों से खेला जाने वाला डांडिया तथा गैर नृत्य से अपनी पहचान देने वाला गैर रास मुख्य है। गैर मुख्यत: राजस्थान का नृत्य है जो गुजरात तक अपनी पहुंच दिये है।

यहां के कुछ क्षेत्रों में गडरिया समुदाय द्वारा यह नृत्य किया जाता है। कहा जाता है कि अकाल के दिनों में राजस्थान से गडरिया लोग अपने पशुधन भेड़ के साथ गुजरात की ओर पलायन कर जाते हैं। कुछ लोग वहीं बस जाते हैं। यह स्थिति आज भी बनी हुई है।

दक्षिण गुजरात में कृषि श्रमिक एक हाथ में डांडिया और दूसरे में मोरछल लेकर विभिन्न वेशभूषाओं में नृत्य करते हैं। यह नृत्य मुख्यत: किसी धार्मिक स्थल के पास किया जाता है। फसल की कटाई से जुड़ा कापणी नृत्य सौराष्ट्र में अधिक लोकप्रिय है। यों कापणा का अर्थ ही काटने से है।

फसल कटाई पर कापणी :

महिलाएं फसल कटाई के समय इस नृत्य द्वारा अपने श्रम को हल्का करती हैं। फसल कटाई के लिए जो उपकरण दांतरंडु, सूडंजा, टोपला काम में आते हैं वे ही उपकरण इस नृत्य में भी साथ देते हैं। पहले जब सामूहिक कृषि की जाती थी तब समूह रूप में लम्बे फैले मैदानों में पौध रोपण पर भी कापणी नृत्य किया जाता था।

यायावर जाति बणजारा समुदाय द्वारा धारवो नृत्य किया जाता है। इसमें पुरूष अपने कंधे पर एक बड़ा सा चंग रख बजाते

हैं जबकि महिलाएं हाथ में रूमाल लेकर थिरकती हैं। आदिवासी समुदाय में होली से संबंधित विविध नृत्य प्रचलित हैं। दक्षिणी गुजरात में गैर नृत्य का विशेष प्रचलन है। यह नृत्य दुबला अथवा डबला जनजाति द्वारा किया जाता है। इधर हिन्दू, बोहारिया तथा पारसी तीन श्रेणियां डबलों की हैं। महिलाएं पोलका, साड़ी के साथ भुजबंध, करधनी, कर्णफूल आदि आभूषण तथा चटख रंगों के कपड़े पहनती हैं। पुरूष कमर में कांसे के घुंघरू वाले पट्टे बांधे रहते हैं।

फाल्गुन कृष्णा एकम पर टाढ़ी गैर रमने की परम्परा है। होली के बाद स्त्री-पुरूष मिलकर समूह रूप में गोठ का आयोजन करते हैं तब जो उत्साह और उल्लास फूट पड़ता है वह वजामणी गैर के रूप में देखा जाता है। ढोल वादन के साथ हाथ में तीर और कामठा लिए स्त्री-पुरूष पीपल की परिक्रमा कर इस नृत्य को विराम देते हैं।

ढोलों पर रावणी :

फाल्गुन कृष्णा बीज को खेड़ब्रह्मा के लांबड़िया गांव में धूलेटी का मेला लगता है जिसमें डूंगरी भील रावणी गैर खेलते हैं। रावणा का अर्थ दरबार करने वालों से है। देशी राजाओं के समय ये आदिवासी राजदरबार में गोठ के लिए जाते थे। उस समय यह नृत्य करते थे। इस नृत्य में एक साथ कई ढोल बजते थे। आज भी डूंगरी भीलों का जो मेला भरता है उसमें एक साथ 80-90 ढोल तक अपनी गूंज दिये मिलते हैं।

भरौंच जिले के अदिवासियों में आगवा नृत्य का प्रचलन है। नाचने वालों के हाथों में लम्बी छड़ियां होती हैं। हर छड़ी के सिरे पर घुंघरू बंधे होते हैं। नृत्य के दौरान नर्तक छड़ियों को ऊपर-नीचे करते रहते हैं।

इस समय घुघरों की मीठी-मीठी झणकार सबका मन मोह लेती है। पंचमहाल, भरौंच तथा वडौदरा क्षेत्र में धूलंडी पर युवक अपने हाथों में रंग, गुलाल और होली की रख लिए निकल पड़ते हैं और एक दूसरे पर लगाते हुए भरपूर मनोरंजन करते हैं। कुछ युवक भुजा, पांव और कमर में घंघरू बांधे नृत्यमग्न भी देखे जाते हैं। इनके द्वारा जो नृत्य किया जाता है वह घेरिया नृत्य कहा जाता है। एक और नृत्य टिपली नाम से जाना जाता है जो युवकों द्वारा ढोल तथा ताल के साथ किया जाता है।

पंचमहाल क्षेत्र के आदिवासी घास्यो नृत्य के लिए प्रसिद्ध हैं। मुख्य रूप से नर्तक शरीर पर घास के पूले बांधते हैं और पांवों में घुंघरू धारण करते हैं। इनके साथ ढोल बजाने वाला होता है। इसी प्रकार महिलाएं अपने सिर पर मटकी रखकर चौराहे तथा हर दुकान पर नृत्य कर त्यौहारी मांगती हैं। इस समय जो गीत गाये जाते हैं वे अश्लील बोल लिए होते हैं। होली का चंदा वसूलने के लिए इधर गोयुली नृत्य की परम्परा भी देखने को मिलती है।

हाथ ताली, बांसुरी तथा ढोल वादन के साथ रात को किया जाने वाला डाकणी नृत्य एक अलग छवि लिए है। इसमें महिला बना व्यक्ति अपने मुंह पर डायन का मुखौटा लगा देता है और दूसरा लकड़ी की घोड़ी पर फुदकता रहता है। मछुहारे आग के चारों ओर फेरे लगाते हुए जो नृत्य करते हैं वह हुतास्नी नृत्य के नाम से जाना जाता है। हुतासन अग्नि का पर्याय है। यह नृत्य नवविवाहित जोड़ों में प्रचलित है। गुजरात की सीमा से जुड़े गांव में राजस्थान के आदिवासी भी अपना प्रभाव रखते हैं। इसलिए राजस्थान में होली का जो रंग आदिवासी समूहों द्वारा देखने को मिलता है वह गुजराती आदिवासियों के साथ भी एकमेक हुआ मिलता है।

होली की ऋतु मस्ती की ऋतु है। उमंग और मादकता की हवा प्रकृति के साथ-साथ पुरूषों में भी बोराई रहती है। ऐसी स्थिति में सब ओर होली की हुड़दंग के नजारे दिखाई देते हैं।

होली का हुड़दंग : बेलन के संग

-डॉ. देवेन्द्र 'इन्द्रेश' -

जिस प्रकार मथुरा के पेड़े तथा आगरा का पेठा मशहूर है, उसी प्रकार बरसाने की लट्ठमार होली मशहूर है। होली में ब्रज की रंगत तो देखते ही बनती है। सारा ब्रज क्षेत्र होली के सरूर में डूब जाता है।

होली में नन्दगांव के छोरे हुर्रे बने राधा रानी के गांव बरसाने होली खेलने जाते हैं। राधा रानी की सखियां आज भी कन्हैया के सखाओं पर लट्ठ बरसाती हैं। बरसाने की हरेक चतुर गूजरी के हाथ में एक मोटा लट्ठ होता है और वे बड़े जोश-खरोश से इन आए हुए होली के हुर्रों पर लट्ठ बरसाती हैं और हुर्रे उनके प्रहार को रोकते हैं।

यह परम्परा आदिकाल से चलती चली आ रही है लेकिन अब खबर मिली है कि इस बार इन बरसाने की हुर्रियों ने निर्णय किया है कि वे नन्दगांव के हुर्रों पर अब लट्ठ नहीं बरसाएंगी। वे अब पराये मर्दों पर अपने हथकण्डे नहीं

दिखाएंगी। क्योंकि उनके अपने मरदों ने कहा है कि क्या हम नन्दगांव के मरदों से कम हैं जो अपनी हुर्रियों के लट्ठ नहीं झेल सकते। अत: इस बार हम अपने ही मरदों को होली का मजा चखाएंगी। इस होली-युद्ध में हमारा प्रिय अस्त्र बेलन होगा। बेलन चलाने में हम सिद्धहस्त हैं और बेलन का वार झेलने में हमारे मरद अभ्यस्त हैं। इस बार ब्रज में होली का समारोह नये रंग में रंगा हुआ होगा।

इस आयोजन के लिए जोर-शोर से तैयारियां चल रही हैं। बरसाने की सभी हुर्रियां अपने-अपने बेलन तैयार कर रही हैं। जिनके पास मजबूत बेलन नहीं हैं, उन्होंने नये बेलन बनवाने का आर्डर दे दिया है। जिनके पास बेलन हैं वे उनको चिकना कर रही हैं। बरसाने के हुर्रे भी खूब खुश नजर आ रहे हैं। वे सोच रहे हैं कि घर में तो बेलन की मार रोज खानी ही पड़ती है, लेकिन होली के इस पावन पर्व पर सार्वजनिक रूप से बेलन खाने का मजा ही कुछ और है। दूसरे उनको इस बात की भी बेहद खुशी है कि नन्दगांव के हुर्रों के सामने वे पौरूषहीन नहीं कहलायेंगे तथा नन्दगांव के हुर्रे हमारी अपनियों के मुखड़े देखने से वंचित रह जायेंगे और मुंह पर गुलाल भी नहीं मल पाएंगे।

जिन हुर्रियों के प्रियतम प्यारे परदेश में बैठे हैं, उनको भी उनकी हुर्रियों ने मोबाइल से एसएमएस कर दिया है कि मेरे राजा जल्दी आजाओ। इस बार नन्दगांव के छोरे लट्ठ की मार खाने नहीं आएंगे। इस बार तो बरसाने के अपनों को ही होली पर बेलन की मार खानी पड़ेगी। अत: जल्दी से अपना बोरिया-बिस्तर गोल करके बेलन की मार खाने आजाओ। होली की फाग में बागन में भीड़ पड़ने लगी है। हम सभी ने अपने-अपने बेलन तैयार कर लिये हैं। अत: अपनी खोपड़ी मजबूत करके जल्दी आ जाओ। वैसे ही मंहगाई की मार से कमर पहले से ही टूट गई है। अब रही सही बेलन की मार से टूट जाएगी।

बरसाने के हुर्रों का भी यह निर्णय अपने में साहसिक कदम है। वे भी बेलन की मार खाने तथा अपनी-अपनी हुर्रियों के गाल पर गुलाल मललने के लिए बेताब हो रहे हैं। बरसाने की हुर्रियां भी हाथ में बेलन लिए अपने-अपने हुर्रों को पीटने के लिए उस शुभ घड़ी का बेचैनी से इन्तजार कर रही हैं।

इस आयोजन को सफल बनाने के लिए सारे ब्रज में तथा विशेषकर बरसाने में ऐलान कर दिया गया है कि इस बार लट्ठमार होली की जगह बेलनमार होली का आयोजन किया जा रहा है। इसलिए बरसाने के सभी हुर्रे अपनी-अपनी हुर्रियों के साथ बेलन की मार खाने के लिए 'होली-चौरा' पर एकत्र हो जाएं और 'होली का हुडदंग : बेलन के संग' आयोजन को सफल बनाये। जो हुर्री बेलन से अपने मरद की सबसे अधिक पिटाई करेगी उसको 'बेलनश्री' की उपाधि से विभूषित किया जाएगा तथा एक चांदी का बेलन देकर सम्मानित किया जाएगा।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।